शुभ अभियान

वार्षिक हिंदी पत्रिका

दशम अंक

वर्ष - 2024-25

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

रेलवे उत्पादन युनिटें एवं मेट्रो रेलवे,

कोलकाता

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की कुछ झलकियां

शुभ अभियान

वार्षिक हिंदी पत्रिका

दशम अंक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वर्ष - 2024-25

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

रेलवे उत्पादन युनिटें एवं मेट्रो रेलवे,

कोलकाता

शुभ अभियान

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

सुश्री नि. माइस्नाम

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

रेलवे उत्पादन युनिटें एवं मेट्रो रेलवे

कोलकाता

संपादक मंडल

श्री भोलानाथ राय	:	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री अमित रोशन	:	हिंदी अधिकारी
श्री विकाश कुमार	:	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती नीलम कुमारी साव	:	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
श्री श्रवण कुमार निषाद	:	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
श्री बिपुल दास	:	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोटः- लेखक के विचार एवं लेख का उत्तरदायित्व उनका अपना है, सम्पादक मंडल का नहीं।

संदेश

'शुभ अभियान' पत्रिका के दशम अंक का विमोचन करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका का प्रकाशन सभी लेखकों, पाठकों आदि के राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा एवं रूचि को प्रमाणित करता है।

पत्रिका में समाहित सभी आलेख एवं रचनाएं सारगर्भित हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन से जहाँ एक ओर इस कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास होगा, वहीं राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए जागरूकता भी बढेगी। हमारा कार्यालय राजभाषा नीतियों पर अमल करने में अग्रसर है एवं राजभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ प्रयासरत भी है।

सम्पादक मंडल को पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु एवं रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा हेतु हृदय से धन्यवाद देती हूं।

(नि.माइस्नाम)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

संपादकीय

हिंदी वैश्विक महत्व की भाषा है, क्योंकि यह संचार, शिक्षा, व्यवसाय और कूटनीति के अवसर खोलती है। हिंदी कई देशों में व्यापक रूप से पढाई और सीखी जाती है, खासकर एशिया और मध्य पूर्व में, जहां यह सांस्कृतिक समझ और सहयोग को बढावा देने में मदद करती है।

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसे संरक्षित एवं प्रचारित करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह हमारी पहचान और विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आवश्यक है कि हमारी युवा पीढी भी अपनी जडों एवं परंपराओं से जुडी रहे ताकि हमारी आने वाली पीढियां भी हिंदी की सुंदरता और ज्ञान का आनंद ले सकें।

14 सितंबर, 1949 को हिंदी को आधिकारिक तौर पर भारत संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया गया। एक बहुभाषी राष्ट्र में सरकारी कार्यों को सुव्यवस्थित करने के लिए हिंदी को आधिकारिक भाषाओं में से एक बनाया गया था। हिंदी को दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है।

"शुभ अभियान" पत्रिका के दशम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका के इस अंक को हमने रोचक एवं शिक्षाप्रद बनाने का प्रयास किया हे। हम सभी रचनाकारों एवं कर्मचारियों का हार्दिक आभार प्रकट करते हैं जिनके सहयोग से इस पत्रिका को प्रस्तुत किया जा रहा है। साथ ही अपने उच्च अधिकारियों को हमारा मार्गदर्शन करने हेतु धन्यवाद देते हैं एवं अपने लेखक मित्रों का भी आभार प्रकट करते हैं जिनकी रचनाओं से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारा कार्यालय राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सदैव अग्रसर रहेगा।

आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि कृपया अपने बहुमूल्य सुझाव हमें अवश्य प्रेषित करें।

(बरूण ज्योति चंदा)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना	लेखक (श्री/श्रीमती)	पृष्ठ संख्या
1.	धार्मिक राजधानी काशी	प्रणय कुमार झा	1
2.	मसूरी यात्रा	अमित रोशन	2
3.	शब्द	नीलम कुमारी साव	3
4.	शिमलाः पर्वतीय सौन्दर्य का अनुभव	सुजीत कुमार	4
5.	आखिरी मुलाकात	अजित कुमार ताँती	5
6.	जीवन एक यात्रा	साधन कुमार राय	6
7.	लेन देन की रीत	बिपुल दास	7
8.	हरिद्वारः एक यात्रा	नब कृष्ण गरई	8
9.	घर	देशराज मीणा	9
10.	हाइड्रोजनः भविष्य का स्वच्छ उर्जा स्त्रोत	बरूण ज्योति चंदा	10
11.	स्वामी विवेकानंदः एक प्रेरणादायक कथा	प्रदीप कुमार भारद्वाज	11
12.	कहानीः सालगिरह	श्रवण कुमार निषाद	12
13.	सबसे बडी सीख	अमन कुमार श्रीवास्तव	13
14.	कार्य जीवन संतुलन	प्रतुल कुमार मंडल	14
15.	दार्जिलिंग का इतिहास	रामजी सिंह	15
16.	सरकारी और निजी क्षेत्र की नौकरियाः एक तुलनात्मक दृस्टिकोण	सुभोजित राय	16
17.	महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना	गौतम तरफदार	17
18.	कम्प्युटर शॉर्टकट्सः कार्यक्षमता को बढाने के उपाय	विकाश कुमार	18
19.	अकेलापन	असित हालदार	19
20.	प्रदूषणः एक संकट	देबिका चक्रबर्ती	20

धार्मिक राजधानी काशी

प्रणय कुमार झा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वाराणसी एक ऐसा शहर है जहाँ पर पग-पग पे आपको मंदिरों के दर्शन होंगे जिसमें काशी विश्वनाथ मंदिर, बाबा काल भैरव, महामृत्युंजय महादेव, संकटमोचन मंदिर, दुर्गा कुंड मंदिर, गौरी केदारेश्वर महादेव आदि प्रमुख हैं। घाटों की छटा देखते ही बनती है। कुल 84 घाट हैं जिनमें दशाश्वमेध घाट, अस्सी घाट, केदार घाट, रीवा घाट, हरिश्चंद्र घाट, मणिकर्णिका घाट आदि प्रसिद्ध घाट हैं। दशाश्वमेध घाट पर प्रतिदिन सायं भव्य आरती का आयोजन किया जाता है जबकि अस्सी घाट पर प्रातः आरती का आयोजन होता है। नवम्बर महीने में देव दीपावली का अपना अलग ही महत्व है। देवताओं को जागृत करने हेतु लाखों की संख्या में दिये जलाकर घाटों को सजाया जाता है। मणिकर्णिका घाट की मान्यता है कि यहां जिनका अंतिम संस्कार होता है उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। वाराणसी के भदैनी में लोलार्क कुंड नामक तालाब है। इसकी मान्यता है कि जिन महिलाओं के संतान नहीं होते उन्हें भाद्र मास की अमावस्या को स्नान करने एवं पहने हुए वस्त्र छोडने पर संतान प्राप्ति होती है। पर्यटकों के लिए सबसे सुखद मौसम नवम्बर से मार्च तक का होता है। इस शहर में नमस्कार या प्रणाम नहीं कहा जाता है, हर हर महादेव कहा जाता है।

काल भैरव बाबा की मान्यता है जब ब्रम्हा जी ने अश्वमेध यज्ञ किया था उस समय बहुत सारे असुरों, राक्षसों ने मिलकर यज्ञ में विध्न डालना शुरू कर दिया। सभी देवताओं ने मिलकर बाबा भोलेनाथ से विनम्रता पूर्वक आग्रह किया कि हमारे यज्ञ में राक्षसों ने तांडव मचा रखा है। साधु संतों की इस पीडा को समझते हुए महादेव जी ने काल भैरव के रूप में अवतरित किया। बाबा काल भैरव ने सभी राक्षसों, असुरों का खात्मा कर अश्वमेध यज्ञ को पूर्ण करवाया था। उसके बाद महादेव के पास गए और कहा कि मैंने अपना कार्य पूर्ण कर दिया। अब मुझे विलीन करें। महादेव भोलेनाथ जी ने कहा कि नहीं आपका निवास वाराणसी में ही होगा। आप काशी के कोतवाल कहलाएंगे। मान्यता है कि आज भी कोतवाली में थानेदार की कुर्सी पर बाबा काल भैरव विराजमान हैं। जय हो काशी के कोतवाल की।

मसूरी यात्रा

अमित रोशन, हिंदी अधिकारी

मसूरी, जिसे पहाड़ो की रानी के नाम से भी जाना जाता है, देश के सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशनों में से एक है। एक ब्रिटिश कैप्टन फ्रेडरिक यंग, एफ. जे. शोर नाम के एक अधिकारी के साथ, 1827 में दून घाटी से पहाड़ी पर चढे थे और उन्हें शानदार दृश्य और स्वास्थयप्रद जलवायु वाली यह पहाड़ी मिली। इस यात्रा ने इस भव्य हिल स्टेशन की नींव रखी।

कई प्रसिद्ध हस्तियों ने मसूरी को अपना घर बनाया है- सबसे उल्लेखनीय हैं लेखक रस्किन बांड और बिल एटकेन। फिल्मस्टार विक्टर बैनर्जी मसूरी में रहते हैं जबकि दिवंगत फिल्मस्टार टॉम आल्टर का जन्म और पालन पोषण यहीं हुआ था। 1960 के दशक में फिल्मस्टार प्रेमनाथ का घर यहां था जबकि देव आनंद के बेटे वुडस्टाक स्कूल में पढते थे। क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर और महेंद्र सिंह धोनी इस पहाड़ी रिसॉर्ट में अक्सर आते हैं।

यह खूबसूरत शहर अपने शैक्षणिक संस्थानों के लिए भी प्रसिद्ध है, जिनमें से अधिकांश औपनिवेशिक काल के हैं। वुडस्टॉक स्कूल, मसूरी के सबसे अच्छे स्कूलों में से एक, एक अंतरराष्ट्रीय सह-शिक्षा बोर्डिंग इसाई मिशनरी प्रतिष्ठान है। अन्य में सेंट जॉर्जेस कॉलेज और वाइनबर्ग एलेन स्कूल शामिल हैं।

मसूरी में घूमने के लिए कुछ बेहतरीन स्थानः-

- मॉल रोडः- यह मसूरी के केंद्र में एक शॉपिंग क्षेत्र है। यहां पर दुकानें, कैफे, वीडियो गेम प्रतिष्ठान एवं स्केटिंग रिंक आदि अवस्थित हैं।
- केम्पटी फॉल्सः- यह मसूरी का प्रसिद्ध झरना है। पर्यटकों के बीच यह स्थान बहुत लोकप्रिय है।
- लाल टिब्बाः- यह मसूरी की सबसे उंची चोटी है। वर्तमान में यहां टीवी टावर अवस्थित है।
- गन हिल पॉईन्टः- लाल टिब्बा के बाद यह मसूरी की दूसरी सबसे उंची चोटी है। यहां आप रोपवे से भी जा सकते हैं। यहां से आप हिमालय श्रंखला एवं दून घाटी के दर्शन कर सकते हैं।
- झड़ीपानी झरनाः- यह मसूरी से लगभग 8.5 कि.मी. दूर मसूरी झड़ीपानी रोड पर है।
- क्लाउड एंडः- यह स्थान घने देवदार के जंगल से घिरा है।
- कंपनी गार्डनः- कंपनी गार्डन में विभिन्न प्रकार के सुंदर फूल एवं एक मनोरंजन पार्क है।
- धनौल्टीः- धनौल्टी मसूरी से करीब 24 किलोमीटर दूर है। यहां से दून घाटी एवं हिम आच्छादित गढवाल हिमालय को देखा जा सकता है।

मसूरी घूमने का सबसे अच्छा समय गर्मियों के दौरान है, क्योंकि यह चिलचिलाती गर्मी से राहत देता है। हालाँकि यदि आप एकांत छुट्टी की तलाश में हैं, तो सर्दियों के दौरान बर्फबारी देखने के लिए यहां आएं।

शब्द

नीलम कुमारी साव,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

शब्द.....
शक्ति भी, प्रेम भी, घृणा भी,
शब्द.....
संपूर्ण भी, असंपूर्ण भी,
शब्द ही ब्रम्ह, शब्द ही विष्णु,
शब्द परम ब्रह्म भी.....
क्षणभंगुर संसार में....
खेल निराले शब्द के,
कभी पुष्प समान संजीले, सुकुमार
तो कभी काँटों की भाँति नुकिले भी.....
शब्द.....
समाधान भी, समस्या भी,
सुकून भी, परेशानी भी,
यह लक्ष्यभेदी बाण भी,
यही अमोघ अस्त्र भी.....
बड़े करामाती है ये शब्द.....
बनते काम बिगड़ जाते,
बिगड़ते काम बन जाते,
पल में, इनके अनूठे इस्तेमाल से,
जीवन को सहज और असहज बनाते,
ये चमत्कारी शब्द ही.....

जनाब, बड़े मायावी है ये शब्द.....
दो सुंदर बोल शब्द के.....
सेहत ..... परिवार.....समाज... ...राष्ट्र.....
सभी के लिए होते हैं
हितकारी.....शुभकारी.....फलकारी.....

शिमलाः पर्वतीय सौन्दर्य का अनुभव

सुजीत कुमार, डी.ई.ओ.

परिचयः

हिमालय के महान पहाडों में स्थित शिमला, प्रकृति की अपरिवर्तनीय शांति और सुंदरता का प्रमाण है। 'हिल्स की रानी' के रूप में जाना जाने वाला यह छोटा सा पहाडी शहर उत्तरी भारत के पर्यटकों का पसंदीदा पर्यटन स्थल रहा है। शिमला के घुमक्कड रास्ते, हरियाली भरे वन और औद्योगिक वास्तुकला के माधुर्य के साथ मेरे साथ चलें।

दिन 1- शिमला में आगमन

शिमला पहुंचते ही ठंढी पहाडियों का मिलन हमारा स्वागत करता है। दूर से बर्फ से ढंके पहाडियों का दृश्य हमें एक आकर्षण और आश्चर्य से भर देता है। हमने एक आरामदायक होटल में चेक इन करने के बाद शांति से भरी शाम के लिए मॉल रोड घूमने के लिए निकलते हैं जो दुकानों, कैफे, सुंदर लाइटिंग और औपनिवेशिक काल की इमारतों से भरा हुआ है। मॉल रोड शिमला की सुंदरतम जगहों में से एक है। शाम में जाने पर बहुत सुकून का एहसास होता है। हम अपने दोस्तों के साथ शाम में घूमने गए और हमने बहुत मस्ती की। हमने हल्की हवा के साथ बर्फबारी का भी आनंद उठाया।

दिन 2- शिमला में भ्रमण

हम अपने दोस्तों के साथ होटल से तैयार होकर घूमने के लिए निकलते हैं। हमने एक गाडी बुक की। फिर जाखू पहाडी के लिए निकलते हैं। यह शिमला की सबसे उंची चोटी है एवं पर्यटकों के लिए यह शिमला का एक प्रमुख आकर्षण है। यह मंदिर उन सभी प्रकृति प्रेमियों एवं तीर्थयात्रियों के लिए स्वर्ग समान है जो जाखू मंदिर में ऐतिहासिक 108 फीट उंची हनुमान जी की प्रतिमा के दर्शन करने आते हैं।

उसके बाद हमलोग वहां से गाडी से कुफरी के लिए रवाना हो गए जो कि वहां से करीब 13 किलोमीटर दूर है। कुफरी एक उंची पहाडी है जहां लगभग सालभर बर्फ दिखाई देती है। वहां स्केटिंग, घुडसवारी और बहुत सारे एडवेंचर गतिविधियां होती रहती हैं। वहां दिन भर घूमने के पश्चात शाम में हमने वापस अपने होटल के लिए प्रस्थान किया।

शिमला जाते वक्त हम कार से गए थे किंतु वापस लौटते वक्त हम टॉय ट्रेन से लौटे। टॉय ट्रेन में बैठने का अलग ही आनंद है। जब ट्रेन सुरंग से गुजरती है तब पूरा अंधकार हो जाता है। इस दौरान छोटे बच्चे खूब शोर मचाते हैं एवं भरपूर आनंद उठाते हैं।

इस तरह हमारा शिमला भ्रमण समाप्त हुआ। यह बहुत ही आनंददायक अनुभव था। दुबारा जब भी समय मिलेगा हम फिर से शिमला का दौरा करना पसंद करेंगे।

आखिरी मुलाकात

अजित कुमार ताँती

आशुलिपिक-II

वह एक सर्द सुबह थी जब सूरज की किरणें धीरे-धीरे आकाश को रंग रही थीं। राधा अपने छोटे से घर के दरवाजे पर खड़ी थी, उसकी आँखें पथरीली हो चुकी थीं, और उसका दिल भारी था। आज उसे अपने जीवन के सबसे प्रिय व्यक्ति, अजय, से आखिरी बार मिलने का अवसर मिला था।राधा और अजय बचपन के मित्र थे। वे एक-दूसरे के बिना अपनी जिंदगी की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। स्कूल से लेकर कॉलेज तक, हर कदम पर वे एक-दूसरे का हाथ थामे चलते रहे। समय के साथ, उनकी दोस्ती प्यार में बदल गई और दोनों ने एक-दूसरे से शादी करने का फैसला किया। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंज़ूर था। अजय को नौकरी के सिलसिले में विदेश जाना पड़ा। राधा ने उसे जाने से रोका, लेकिन अजय का करियर भी महत्वपूर्ण था। दोनों ने वादा किया कि वे दूर रहकर भी अपने प्यार को बनाए रखेंगे। वे रोज़ एक-दूसरे को पत्र लिखते और फोन पर बातें करते, लेकिन समय के साथ दूरी बढ़ती गई और उनके बीच के संवाद कम होने लगे।अजय की विदेश में तरक्की हो रही थी, लेकिन उसकी सेहत बिगड़ती जा रही थी। एक दिन, अजय ने राधा को फोन किया और बताया कि उसे कैंसर हो गया है और वह ज्यादा समय नहीं जी पाएगा। यह सुनकर राधा का दिल टूट गया। उसने तुरंत अजय से मिलने का फैसला किया।अजय अब अपने आखिरी दिनों में था। वह कमजोर और बेजान हो चुका था, लेकिन उसकी आँखों में अभी भी राधा के लिए वही प्यार था। राधा ने उसके पास बैठकर उसका हाथ थामा और दोनों ने अपनी पुरानी यादों को ताजा किया। वे हंसते-हंसते रो पड़े।अजय ने राधा से कहा, "राधा, मुझे माफ करना कि मैं तुम्हें इस हालत में छोड़कर जा रहा हूं। लेकिन याद रखना, मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा, तुम्हारे दिल में।"राधा की आँखों में आंसू थे, लेकिन उसने मुस्कुराने की कोशिश की। उसने कहा, "अजय, तुम हमेशा मेरे साथ रहोगे। तुम्हारी यादें, तुम्हारा प्यार, सब मेरे साथ रहेंगे।"अजय ने आखिरी बार राधा को गले लगाया और धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद हो गईं। राधा ने उसे अपने दिल से लगाया और उसकी साँसों की गिनती करती रही, जब तक कि वह पूरी तरह शांत नहीं हो गया।उस दिन राधा ने अपना सबसे प्रिय व्यक्ति खो दिया, लेकिन उसने अपने दिल में उसकी यादें और उसका प्यार सहेज लिया। उसने अपने जीवन को अजय की यादों के सहारे जीने का फैसला किया। उसकी आँखों में आँसू थे, लेकिन उसका दिल प्यार से भरा था।राधा की कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्चा प्यार कभी नहीं मरता। वह हमारे दिलों में हमेशा जीवित रहता है, चाहे हालात कैसे भी हों।

जीवन एक यात्रा

साधन कुमार राय,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन एक यात्रा है,
जिसमें सुख और दुख है,
खुशी के पल,
दुःख के पल,
ये दोनों ही जीवन के अंग हैं।

जीवन में कभी-कभी,
कठिनाइयाँ भी आती हैं,
पर इनसे डरना नहीं चाहिए,
क्योंकि इनसे ही जीवन में,
नई चुनौतियाँ आती हैं।

जीवन में हमेशा,
खुद पर विश्वास रखना चाहिए,
और कठिनाइयों से लड़ना चाहिए,
क्योंकि जीत हमेशा,
उनके ही हिस्से में आती है,
जो कठिनाइयों से नहीं डरते।

जीवन एक उपहार है,
इसको अच्छे से जीना चाहिए,
और हर पल को,
जिन्दगी भर याद रखना चाहिए।

कविता का विषय जीवन है और इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है। कविता में बताया गया है कि जीवन में सुख और दुख दोनों आते हैं, लेकिन इनसे डरना नहीं चाहिए। कविता में यह भी बताया गया है कि जीवन में हमेशा खुद पर विश्वास रखना चाहिए और कठिनाइयों से लड़ना चाहिए। कविता का अंत यह बताते हुए होता है कि जीवन एक उपहार है और इसे अच्छे से जीना चाहिए।

लेन-देन की रीत

बिपुल दास,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

जीवन का हर कदम एक लेन-देन है,

जिसने जो दिया, उसे लौटाना है।

कर्ज का हिसाब कभी लंबा कभी छोटा,

लेकिन अंत में सब चुकाना है।

हक और कर्तव्य की यह लड़ाई,

हर किसी को निभानी पड़ी है।

जीवन का व्यापार है लंबा,

पर अंत में सबको एक राह पकड़नी है।

जब ईश्वर के दरबार में हिसाब होगा,

हर ऋण और बंधन को छोड़ना होगा।

तुम्हारी आत्मा की पवित्रता को पा,

मुक्ति का मार्ग चुनना होगा।

कविता का मुख्य संदेश यह है कि जीवन में किए गए सभी कर्मों का लेखा-जोखा होता है, और अंत में हमें अपने कार्यों के आधार पर जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। इसलिए, जीवन को ईमानदारी और सच्चाई के साथ जीना चाहिए, ताकि अंत में हमें आत्मा की शुद्धता और मुक्ति की प्राप्ति हो सके।

हरिद्वार: एक यात्रा

नबकृष्ण गरई
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हरिद्वार की मेरी यात्रा ने मेरे जीवन में एक नया अध्याय खोला। मैं, अपनी गर्मियों की छुट्टियों में अपने माता-पिता के साथ इस पवित्र नगरी की ओर निकला था। यात्रा की शुरुआत ट्रेन से हुई, और मेरे लिए यह एक नया और रोमांचक अनुभव था। रास्ते भर मैं खिड़की से बाहर झांकता रहा, और पहाड़ों और नदियों की सुंदरता में खो गया।

हरिद्वार पहुंचने पर, गंगा नदी की पवित्रता और उसके किनारे की शांति ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। मेरे माता-पिता के साथ गंगा में स्नान करना मेरे लिए एक विशेष अनुभव था। उस समय की पवित्रता और दिव्यता को मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता। स्नान के बाद हम हर की पौड़ी पर गंगा आरती में शामिल हुए। आरती के दौरान जलते हुए दीपकों की रोशनी और मंत्रों की गूंज ने मेरे दिल को गहराई से छू लिया। उस समय, मुझे ऐसा लगा मानो मैं किसी दिव्य लोक में प्रवेश कर चुका हूँ।

अगले दिन, हम मनसा देवी और चंडी देवी मंदिरों के दर्शन के लिए निकले। रोपवे से मंदिर तक की यात्रा के दौरान, मैंने नीचे फैले शहर और हरियाली का भरपूर आनंद लिया। मंदिरों में दर्शन के बाद, हमने हरिद्वार के अन्य प्रमुख स्थलों का भी भ्रमण किया, जिसमें रामझूला और लक्ष्मणझूला भी शामिल थे।

हरिद्वार की इस यात्रा ने मुझे न केवल आध्यात्मिक रूप से समृद्ध किया, बल्कि मुझे भारतीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं के महत्व को भी समझने का अवसर दिया। जब हम यात्रा के अंत में घर लौट रहे थे, मेरे मन में गंगा किनारे बिताए हुए वो क्षण और मंदिरों की दिव्यता की यादें बसी हुई थीं।

यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक बन गई, जिसे मैं हमेशा अपने दिल में संजोकर रखूँगा। हरिद्वार की इस यात्रा ने मुझे न केवल आध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव कराया, बल्कि मेरे भीतर एक नई ऊर्जा और सकारात्मकता का भी संचार किया।

हरिद्वार सिर्फ एक यात्रा नहीं थी, बल्कि आत्मा को झकझोर देने वाला एक अनुभव था, जिसे मैं जीवनभर याद रखूँगा। चाहे आप आध्यात्मिक ज्ञान की खोज में हों या प्रकृति की शांति की तलाश में, हरिद्वार एक ऐसा स्थान है जहाँ हर किसी को अपने जीवन में एक बार अवश्य जाना चाहिए।

घर

देशराज मीणा, डी.ई.ओ.

मैं इस घर को जानता हूँ
जिसके बिखरे हुए आँगन में
बचपन की किलकारियाँ गूँजती थीं
और शाम को लौटते पंछी
नए गीत गाते थे।

इस घर में
हर दीवार के पास कहानियाँ हैं
जो गुज़रे वक़्त की गवाह हैं
और उन खिड़कियों से
सपनों की उड़ान भरी जाती थी।

यह घर उन वीरान घरों जैसा है
जहाँ वक़्त ने अपने निशान छोड़े हैं
लेकिन यादों की खुशबू
अब भी हवा में तैरती है।

वहाँ पुराने दरवाज़े हैं
जिन्हें खोलने पर
जाने कितनी ही यादें ताज़ा हो जाती हैं
और दिल में एक मीठी सी कसक
उभर आती है।

इस घर में
शांति का एक अलग ही एहसास है
जैसे किसी पुराने मंदिर के प्रांगण में
जहाँ हर आहट में
एक अनसुनी दुआ छुपी है।

यह घर मेरा है,
मेरे सपनों का बसेरा है
जहाँ हर दीवार, हर कोना
मेरी कहानी कहता है
और हर सुबह
एक नया अध्याय लिखता है।

हाइड्रोजन: भविष्य का स्वच्छ ऊर्जा स्रोत

बरूण ज्योति चंदा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

परिचय

वर्तमान समाज में ग्लोबल वार्मिंग और कार्बन उत्सर्जन का खतरा सर्वव्यापी है। आज की सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है, जीवाश्म ईंधन के स्थान पर एक स्वच्छ ऊर्जा और स्थायी विकल्प खोजना। इस संदर्भ में हाइड्रोजन एक महत्वपूर्ण समाधान के रूप में उभर रहा है। हाइड्रोजन को भविष्य का ईंधन कहा जा रहा है क्योंकि यह लगभग कोई ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जित नहीं करता है। वर्तमान में, हाइड्रोजन के उत्पादन और भंडारण के सर्वोत्तम तरीकों को खोजने के लिए बड़े पैमाने पर शोध किया जा रहा है।

हाइड्रोजन का उत्पादन

हाइड्रोजन का उत्पादन विभिन्न घरेलू संसाधनों से किया जा सकता है। वर्तमान में, संयुक्त राज्य अमेरिका में प्राकृतिक गैस हाइड्रोजन का प्राथमिक स्रोत है। हाइड्रोजन का उत्पादन अब बिजली का उपयोग करके किया जा रहा है, चाहे वह मीटर से हो या सौर, भू-तापीय, पवन, या बायोमास जैसी नवीकरणीय स्रोतों से।

हाइड्रोजन आधारित ईंधनों के संभावित लाभ और अवसर

हाइड्रोजन ईंधन, ऊर्जा स्रोतों को विविधता देने और जीवाश्म ईंधनों पर वैश्विक निर्भरता को कम करने का एक अवसर प्रदान करता है। हाइड्रोजन-आधारित ईंधन कोशिकाओं का उपयोग करके जीवाश्म ईंधनों से बिजली उत्पन्न करके उत्सर्जन को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इसके अलावा, हाइड्रोजन राजनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विदेशी तेल पर निर्भरता को कम करता है। हाइड्रोजन ईंधन पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालता है ।

हाइड्रोजन तकनीक के लाभ

हाइड्रोजन ईंधन सेल तकनीक के कई फायदे हैं। जबकि पारंपरिक आंतरिक दहन इंजन कार्बन मोनोऑक्साइड का उत्सर्जन करते हैं, हाइड्रोजन ईंधन सेल किसी भी कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन नहीं करते। हाइड्रोजन का उपयोग लगभग ऊर्जा-तटस्थ है, क्योंकि इसे बनाने के लिए आवश्यक ऊर्जा की मात्रा उतनी ही होती है जितनी यह उत्पन्न करता है। इसके अलावा, हाइड्रोजन ईंधन सेल आंतरिक दहन इंजनों की तुलना में दोगुने कुशल होते हैं और इन्हें केवल तीन मिनट में रिचार्ज किया जा सकता है।

निष्कर्ष

हाइड्रोजन तकनीक को भविष्य का ईंधन माना जा रहा है, लेकिन इसके कई चुनौतियाँ भी हैं। हाइड्रोजन का उत्पादन जटिल और महंगा है, और इसे सुरक्षित रूप से संग्रहीत करना कठिन है। इसके बावजूद, हाइड्रोजन ऊर्जा उत्पादन के लिए एक पर्यावरण-अनुकूल और कुशल विकल्प है, जो भविष्य में जीवाश्म ईंधनों पर हमारी निर्भरता को कम कर सकता है।

स्वामी विवेकानंद: एक प्रेरणादायक कथा

प्रदीप कुमार भारद्वाज
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कोलकाता की पवित्र भूमि में, 12 जनवरी 1863 को एक ऐसे महान व्यक्तित्व का जन्म हुआ, जिसने न केवल भारत की, बल्कि पूरी दुनिया की सोच को नई दिशा दी। इस बालक का नाम था नरेंद्रनाथ दत्ता, जिन्हें हम आज स्वामी विवेकानंद के नाम से जानते हैं। नरेंद्र बचपन से ही बेहद कुशाग्र बुद्धि और असाधारण क्षमता के धनी थे। वे जो भी पढ़ते, उसे तुरंत ही समझ जाते थे। उनके गुरुओं ने उनकी इस अद्वितीय क्षमता को पहचाना और उन्हें 'श्रुतिधर' की उपाधि दी। बचपन से ही वे तैराकी, कुश्ती जैसे खेलों में निपुण थे और उनका दैनिक जीवन बहुत सक्रिय था। रामायण और महाभारत के शिक्षाओं से प्रभावित होकर, नरेंद्र के मन में धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा थी, और उनके आदर्श पवन पुत्र हनुमान थे।

हालाँकि, नरेंद्र का स्वभाव प्रारंभ से ही तर्कशील था। वे केवल धार्मिक मान्यताओं को अंधविश्वास की दृष्टि से नहीं मानते थे, बल्कि हर विश्वास के पीछे तर्क और न्याय की खोज करते थे। यह जिज्ञासा उन्हें कई संतों के पास ले गई, जहाँ उन्होंने उनसे एक ही सवाल पूछा, "क्या आपने भगवान को देखा है?" लेकिन किसी भी संत ने उन्हें संतोषजनक उत्तर नहीं दिया, जब तक कि उनकी मुलाकात रामकृष्ण परमहंस से नहीं हुई।

रामकृष्ण परमहंस से उनकी पहली मुलाकात कोलकाता में उनके मित्र के घर पर हुई थी। रामकृष्ण परमहंस ने नरेंद्र में छुपी अपार शक्तियों को पहचान लिया और उन्हें दक्षिणेश्वर बुलाया। रामकृष्ण परमहंस के सान्निध्य में नरेंद्र की आत्मिक जिज्ञासा को शांत होने का मार्ग मिला। उन्होंने रामकृष्ण परमहंस को अपने गुरु के रूप में स्वीकार किया और अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने लगे। गुरु के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा और कृतज्ञता ने उन्हें गुरु के शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए चारों दिशाओं में यात्रा करने के लिए प्रेरित किया।

एक बार स्वामी विवेकानंद एक गाँव में गए। गाँव में उन्होंने देखा कि बहुत से युवा निराश और असमंजस में थे। वे अपने भविष्य को लेकर चिंतित थे और समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। स्वामीजी ने गाँव के युवाओं को एकत्र किया और उनसे बात की।

स्वामीजी ने उनसे कहा, "तुम्हारे अंदर अनंत शक्तियाँ हैं। तुम जो भी सोचते हो, वह तुम्हारी वास्तविकता बन जाती है। यदि तुम अपने आप पर विश्वास करोगे और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहोगे, तो कोई भी शक्ति तुम्हें सफल होने से रोक नहीं सकती।"

स्वामी विवेकानंद का यह संदेश युवाओं के मन में गहराई से बैठ गया। उन्होंने अपनी सोच को बदला, आत्मविश्वास को बढ़ाया और जीवन में नई ऊर्जा के साथ अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने लगे। स्वामीजी का संदेश था कि अगर हम अपने आप पर विश्वास करें और मेहनत करें, तो सफलता अवश्य मिलेगी।

कहानीः सालगिरह

श्रवण कुमार निषाद,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मालिनी आज बहुत प्रसन्न है। उसके विवाह की आज बारहवीं वर्षगांठ है। आज जल्दी उठकर सुबह से ही तैयारियों में लगी हुई है, बच्चों का नाश्ता और पति प्रशांत के दोपहर का भोजन तैयार करना है। उनके स्कूल और ऑफिस जाने के बाद उसे सालगिरह मनाने की भी तैयारी करनी है। हालांकि उसने प्रशांत से आज के दिन ऑफिस से छुट्टी लेने को कहा था, किंतु प्रशांत ने पिछले कुछ वर्षों की भांति इस बार भी कार्यालय में काम अधिक होने के कारण छुट्टी मिलने की बात से इंकार कर दिया। प्रशांत ने सालगिरह मनाने के लिए होने वाले खर्च के पैसे मालिनी को पहले ही दे दिए थे। प्रशांत और मालिनी के दोनो बच्चे राहुल और गौतम बहुत मेधावी हैं। आज मालिनी इनको स्कूल नहीं भेजना चाहती है किंतु क्या करे दोनो की परीक्षाएं पास आ रही हैं। प्रशांत सरकारी कार्यालय में बडे बाबू के पद पर है और उसे छुट्टी मिलने में हमेशा परेशानी रहती है। पहले वह किसी तरह से छुट्टी ले ही लेता था किंतु पिछले कुछ वर्षों से स्थिति बदल सी गई है, शायद वह इसके लिए इतनी कोशिश ही नहीं करता है। फिर भी प्रशांत ने आज घर जल्दी आने का वादा किया है।

विवाह पश्चात कुछ वर्ष तो उनके बहुत अच्छे व्यतीत हुए किंतु राहुल और गौतम के आने के बाद स्थिति धीरे- धीरे बदलती गई। इस बात का एहसास उन दोनो को ही है। कारण कुछ भी हो किंतु प्रशांत को लगता है कि मालिनी अब उसकी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देती है, उसका ज्यादातर समय घर के कामों या बच्चों की देखभाल में व्यतीत होता है। जबकि दूसरी तरफ मालिनी को महसूस होता है कि प्रशांत अब अपने काम में कुछ ज्यादा ही व्यस्त हो गया है। पहले उसे लगता था कि संयुक्त परिवार से दूर अलग रहने से शायद उनके बीच पहले वाला अपनापन फिर से लौट आए, किंतु दो वर्ष पूर्व लखनऊ से कानपुर स्थानांतरण होने के बाद भी उनके बीच कुछ नहीं बदला। अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें इसकी आदत सी हो गई है। मालिनी तो अपने पुराने दिनों को याद करते हुए कभी कभी प्रशांत से शिकायत भी कर देती है परंतु प्रशांत बहुत कुछ कहना चाहते हुए भी जाने क्यों कुछ नहीं कह पाता है।

हर दिन की तरह आज भी प्रशांत कामों में ऐसा उलझा कि चाह कर भी जल्दी घर नहीं आ पाया। मालिनी को शायद पहले से ही इसका अंदेशा था इसलिए जितना हो सका उसने घर पर ही सालगिरह मनाने का इंतजाम कर रखा था। प्रशांत उदास मन से घर आया और मालिनी से क्षमा मांगी, मालिनी ने भी कह दिया कि कोई बात नहीं यदि आप आ पाते तो पहले ही आ जाते।

सबसे बडी सीख

अमन कुमार श्रीवास्तव,
एम.टी.एस.

एक लडका जो हमेशा अपने माँ-बाप को दोष दिया करता था कि आपने मेरे लिए किया ही क्या है? तो उसके पिता ने उसे आभास दिलाने के लिए उसको एक दिन घर से बाहर निकाल दिया और कहा कि जाओ और पैसे कमा के लाओ। लडका परेशानी में आ गया। माँ के पास गया। माँ ने उसको पैसे दे दिए लेकिन इस बात का पता पिता को चल गया था। जैसे ही वह शाम को पिताजी के पास पैसे लेकर पहुंचा तो पिताजी ने कहा कि जाओ इन पैसों को कुएं में फेंक के आओ और उसने वो पैसे कुएं में डाल दिए। उसको उन पैसों की कीमत नहीं पता थी। पिता ने वापस ऐसे ही किया लेकिन इस बार बच्चे के पिता ने उसे बच्चे की माँ को मायके भेज दिया। बच्चा अपनी बहन के पास गया। बहन ने उसको पैसे दे दिए। इस का भी पता उसके पिता को चल गया। शाम को जब वह घर आया और उसने पिता को पैसे दिए तो उसके पिता ने कहा कि जाओ और इनको भी कुएं में डाल के आ जाओ। उसने यही किया क्योंकि उसे बिल्कुल नहीं पता था पैसा कैसे कमाया जाता है लेकिन उसके पिता उसको पैसे की कदर समझाना चाहते थे। अगले दिन उसके पिता ने उसकी बहन को ससुराल भेज दिया। अब बच्चा परेशानी में आ गया। अब उसके पास कोई विकल्प नहीं था। वह भटकता हुआ बाजार में गया। वहाँ उसे एक ट्रक से सामान उतारने का एक काम मिला। बदले में उसे कुछ पैसे मिले। उन पैसों को लेकर वह अपने पिताजी के पास आया। वह उसकी खून पसीने की कमाई थी। पिताजी ने कहा कि जाओ इन पैसों को कुएं में फेंक आओ। इस बार उसको बेहद गुस्सा आया कि यह मेरी खून पसीने की कमाई हुई मेहनत के पैसे हैं तो उसके पिता ने कहा कि अब आई तुम्हें यह बात समझ में कि पैसे कितनी मेहनत से कमाए जाते हैं। तुम हमसे कहते हो कि आपने मेरे लिए किया ही क्या है लेकिन जब तुम खाना खाते हो तो तुम्हें यह नहीं पता कि आज तुम्हें जो दो वक्त का खाना मिल रहा है उसके लिए जो पैसे हमने कमाए हैं, उसके लिए भी मेहनत करनी पडती है। बच्चे को उसकी गलती का एहसास हो चुका था।

कार्य जीवन संतुलन

प्रतुल कुमार मंडल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज के तेजी से बदलते और प्रतिस्पर्धात्मक समाज में कार्य जीवन संतुलन का महत्व दिनोदिन बढता जा रहा है। कार्य जीवन संतुलन का तात्पर्य है कि व्यक्ति अपने कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच एक उपयुक्त संतुलन बनाए रखे। यह संतुलन व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक सेहत के साथ साथ उसके पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है।

आजकल तकनीकी विकास और व्यवसायिक मांगों के चलते काम का बोझ काफी बढ गया है। लोग अपने काम को लेकर इतने व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें अपने परिवार, दोस्तों और स्वयं के लिए समय निकालना मुश्किल हो जाता है। इस प्रकार की स्थिति से व्यक्ति में तनाव एवं मानसिक थकान और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। कार्य जीवन संतुलन बनाए रखने की आवश्यक्ता इसलिए है ताकि व्यक्ति काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच एक स्वस्थ और सजीव संबंध स्थापित कर सके।

वर्तमान में कार्य जीवन संतुलन बनाए रखना कई कारणों से चुनौतीपूर्ण हो गया है। सबसे पहले, लगातार काम के दबाव और उससे जुडे समय की कमी ने जीवन को अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को नजरअंदाज करना आम बना दिया है। इसके अलावा कार्यालय का काम घर तक आने का चलन ने भी लोगों को लगातार काम में उलझाए रखा है। इससे न केवन मानसिक थकान बढी है बल्कि व्यक्तिगत संबंधों पर भी नकारात्मक प्रभाव पडा है।

इसलिए कार्य जीवन संतुलन बनाए रखने के कई लाभ हैं। सबसे पहले, यह व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए फायदेमंद है। जब व्यक्ति अपने काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखता है, तो वह तनाव से बचा रहता है। और उसकी कार्यक्षमता भी बढती है। इसके अलावे, यह संतुलन व्यक्ति को अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने का मौका देता है जिससे उसके संबंध मजबूत होते हैं और जीवन में संतुष्टि की भावना बढती है।

कार्य जीवन संतुलन बनाए रखने के लिए सबसे पहले समय निर्धारित करना और उन्हें सख्ती से पालन करना आवश्यक है। इसके अलावे समय समय पर ब्रेक लेना, योग और ध्यान जैसी गतिविधियों को अपनाना और परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना भी महत्वपूर्ण है।
कार्य जीवन संतुलन न केवल व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढाता है, बल्कि उसे एक स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने में भी सहायता करता है। जिससे वह तनावमुक्त, स्वस्थ और संतुष्ट जीवन जी सकता है। अतः कार्य जीवन संतुलन अनिवार्य है ताकि हम एक सफल और संतुलित जीवन जी सकें।

दार्जिलिंग का इतिहास

रामजी सिंह, लिपिक

दार्जिलिंग का नाम तिब्बती शब्दों 'डोरजे' (जिसका अर्थ है वज्र) और 'लिंग' (अर्थात स्थान) से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'वज्र का स्थान'। दार्जिलिंग का इतिहास 1835 से बहुत पहले का है, जब इसे ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्राप्त किया था। इससे पहले यह सिक्किम और नेपाल का हिस्सा रहा, लेकिन इन दोनों राज्यों का इस क्षेत्र के प्रारंभिक इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी है।

18वीं सदी के अंत तक गोरखाओं ने सिक्किम पर लगातार आक्रमण किए और 19वीं सदी की शुरुआत में सिक्किम के काफी हिस्से पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश हस्तक्षेप के बाद 1814 में एंग्लो-नेपाल युद्ध हुआ, जिसमें गोरखा सेना की हार हुई। 1817 की टिटालिया संधि के तहत, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने सिक्किम के राजा को उनके क्षेत्र वापस दिलाए और उनकी संप्रभुता की गारंटी दी। सिक्किम को नेपाल, भूटान और तिब्बत के बीच एक बफर राज्य के रूप में बनाए रखा गया।

1828 में ब्रिटिश अधिकारियों कैप्टन लॉयड और जे.डब्ल्यू. ग्रांट ने दार्जिलिंग का दौरा किया और इसे सैनिटोरियम (स्वास्थ्य केंद्र) के रूप में विकसित करने की सिफारिश की, जहां ब्रिटिश अधिकारी गर्मियों में आ सकते थे। इसके बाद सिक्किम के राजा से बातचीत करके 1835 में दार्जिलिंग को बिना शर्त ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया गया। यह क्षेत्र उस समय मात्र 138 वर्ग मील का था और लगभग निर्जन था।

ब्रिटिश शासन के दौरान दार्जिलिंग का तेजी से विकास हुआ। 1839 में डॉ. कैंपबेल को दार्जिलिंग का अधीक्षक नियुक्त किया गया, जिन्होंने क्षेत्र में सड़कें बनवाईं, वाणिज्य को प्रोत्साहित किया और प्रवासियों को यहां बसने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप, दार्जिलिंग की जनसंख्या 1839 में 100 से बढ़कर 1849 में 10,000 हो गई।

1840 के दशक में ब्रिटिश और सिक्किम के संबंधों में तनाव उत्पन्न हुआ, जिसके परिणामस्वरूप 1850 में ब्रिटिश सरकार ने सिक्किम से 640 वर्ग मील का अतिरिक्त क्षेत्र हड़प लिया। 1861 में एक नई संधि के तहत सिक्किम के राजा को अपने कुछ अधिकार छोड़ने पड़े, जिससे दार्जिलिंग को और अधिक स्थिरता मिली।

1864 में भूटान के साथ विवाद के बाद दार्जिलिंग का क्षेत्र और बढ़ा, जब ब्रिटिश सरकार ने भूटान डुआर्स और कालिम्पोंग पर कब्जा कर लिया। 1866 में दार्जिलिंग का वर्तमान क्षेत्रफल 1234 वर्ग मील हो गया, और इस समय से दार्जिलिंग में शांति और प्रगति का एक नया दौर शुरू हुआ, जिससे यह क्षेत्र शिक्षा, चाय उद्योग और पर्यटन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

सरकारी और निजी क्षेत्र की नौकरियां: एक तुलनात्मक दृष्टिकोण

सुभोजित राय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

➢ सरकारी कार्यालय

कार्यवातावरण : भारत में सरकारी कार्यालय आमतौर पर संरचित और पदानुक्रमित कार्यवातावरण के लिए जाने जाते हैं, जहां काम की गति निजी क्षेत्र की तुलना में धीमी होती है और स्थिर प्रक्रियाओं और प्रोटोकॉल पर जोर दिया जाता है।

नौकरी की सुरक्षा : सरकारी नौकरियों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी नौकरी की सुरक्षा है, जो उच्च स्थिरता प्रदान करती है और छंटनी या अचानक नौकरी छूटने के जोखिम को न्यूनतम करती है।

कार्य-जीवन संतुलन : सरकारी नौकरियां सामान्यतः बेहतर कार्य-जीवन संतुलन प्रदान करती हैं, जिसमें निश्चित काम के घंटे, उदार छुट्टी की नीतियां, और कम ओवरटाइम शामिल होते हैं।

नौकरशाही : नौकरशाही के कारण निर्णय लेने और कार्यान्वयन में देरी हो सकती है, जो गतिशील कार्यवातावरण की अपेक्षा करने वाले कर्मचारियों को निराश कर सकती है।

लाभ और भत्ते : सरकारी कर्मचारियों को पेंशन, स्वास्थ्य देखभाल, आवास भत्ते और अन्य लाभ प्राप्त होते हैं जो दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा में सहायक होते हैं।

➢ निजी क्षेत्र

कार्यवातावरण : निजी क्षेत्र अपने गतिशील और तेज-तर्रार कामकाजी माहौल के लिए जाना जाता है। यहां प्रदर्शन, नवाचार और लक्ष्यों को प्राप्त करने पर जोर दिया जाता है।

कैरियर विकास : निजी क्षेत्र में कैरियर के विकास के अवसर आमतौर पर अधिक प्रचुर मात्रा में होते हैं। कर्मचारी अपने प्रदर्शन और कौशल के आधार पर जल्दी से उन्नति कर सकते हैं।

कार्य-जीवन संतुलन, नवाचार और लचीलापन : निजी क्षेत्र में कार्य-जीवन संतुलन चुनौतीपूर्ण हो सकता है क्योंकि काम का दबाव और समयसीमा होती है, लेकिन लचीली कार्यनीतियां और नवाचार की स्वतंत्रता कर्मचारियों को एक उत्तेजक कार्यवातावरण प्रदान करती हैं।

लाभ और भत्ते : निजी क्षेत्र में वेतन सरकारी नौकरियों की तुलना में अधिक हो सकता है, खासकर विशिष्ट कौशल वाली भूमिकाओं में, जहां प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन और बोनस भी मिलते हैं।

निष्कर्ष : सरकारी और निजी क्षेत्र की नौकरियों दोनों के अपने अद्वितीय लाभ और चुनौतियां हैं। नौकरी का चयन अक्सर व्यक्तिगत प्राथमिकताओं, करियर लक्ष्यों और जीवनशैली की प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है|

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना

गौतम तरफ़दार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत अपने इतिहास और संस्कृति के कारण विश्व में एक विशेष स्थान रखता है। आजादी के बाद इस दिशा में सुधार की पहल की गई, लेकिन हाल के वर्षों में इन प्रयासों में तेजी आई है। डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि किसी समाज की प्रगति को सही ढंग से समझने के लिए उसकी महिलाओं की स्थिति का आकलन करना आवश्यक है। महिलाएं समाज की आधी आबादी होती हैं, और उनकी स्थिति समाज की ताकत और समृद्धि को दर्शाती है। बिना महिलाओं की भागीदारी के कोई भी समाज पूरी तरह से सफल नहीं हो सकता।

भारत में विभिन्न संस्कृतियों का संगम है, लेकिन महिलाओं को अक्सर उपेक्षित किया जाता है। पितृसत्तात्मक समाज ने उनके जीवन और सोच को नियंत्रित किया है। जब भी महिलाओं के सशक्तिकरण की बात आती है, तो समाज खुद को चुनौती में पाता है और लगातार बदलाव के लिए संघर्ष करता है।

पितृसत्तात्मक समाज का प्रभाव वैश्विक स्तर पर रहा है, लेकिन महिला सशक्तिकरण की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम 19वीं सदी में पश्चिमी देशों में नारी आंदोलन के रूप में उठा। इस आंदोलन ने स्त्री सशक्तिकरण की अवधारणा को प्रमुखता दी। भारत में नारी आंदोलनों का दूसरा दौर 1915 के आसपास शुरू हुआ, जब महिलाएं सक्रिय रूप से भाग ले रही थीं। 1917 में भारतीय महिला संघ की स्थापना हुई, और गांधी व अंबेडकर ने महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। अंबेडकर ने मताधिकार, लैंगिक भेदभाव समाप्त करने और समानता के अधिकारों की दिशा में अहम भूमिका निभाई।

वर्तमान में, महिला सशक्तिकरण का तीसरा चरण सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक समानता पर केंद्रित है। हालांकि कानूनी रूप से महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त हैं, उन्हें समाज में अभी भी संघर्ष करना पड़ता है। आज ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियां भी शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, जो एक सकारात्मक संकेत है। महिलाओं के सशक्तिकरण से ही उनके लिए संभावनाओं के नए द्वार खुल सकेंगे।

भारत में महिलाओं को कानूनी रूप से समान अधिकार प्राप्त हैं, लेकिन समाज में अभी भी उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। आधुनिक काल में महिलाओं की शिक्षा की दिशा में कई प्रयास किए गए हैं, और अब ग्रामीण क्षेत्रों की बच्चियाँ भी पढ़ाई कर रही हैं। हालांकि जातिगत भेदभाव अभी भी मौजूद है, निचली जातियों की लड़कियाँ भी प्राथमिक शिक्षा की ओर बढ़ रही हैं, जो एक सकारात्मक बदलाव है।

कंप्यूटर शॉर्टकट्स: कार्यक्षमता को बढ़ाने के उपाय

विकाश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कंप्यूटर पर काम करते समय, समय की बचत और कार्यक्षमता को बढ़ाने के लिए शॉर्टकट्स का उपयोग बेहद फायदेमंद होता है। ये शॉर्टकट्स की-बोर्ड पर दिए गए विशेष संयोजनों के रूप में होते हैं, जो विभिन्न कार्यों को त्वरित और आसान बनाते हैं। आइए, हम कुछ महत्वपूर्ण शॉर्टकट्स की चर्चा करें और समझें कि वे हमारी कंप्यूटर कार्यक्षमता को कैसे बढ़ाते हैं।

1. कॉपी, कट और पेस्ट (Ctrl + C, Ctrl + X, Ctrl + V)

यह तीन शॉर्टकट्स सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले हैं। "Ctrl + C" से किसी भी चयनित वस्तु या टेक्स्ट को कॉपी किया जाता है, "Ctrl + X" से उसे काटा जाता है, और "Ctrl + V" से उसे पेस्ट किया जाता है। ये शॉर्टकट्स हमें समय की बचत करने में मदद करते हैं और दस्तावेजों को तेजी से संपादित करने में सहायक होते हैं।

2. सेव और सेव एज़ (Ctrl + S, Ctrl + Shift + S)

"Ctrl + S" शॉर्टकट से हम अपने दस्तावेज़ को जल्दी से सेव कर सकते हैं, जो डेटा खोने से बचाने में मदद करता है। "Ctrl + Shift + S" शॉर्टकट का उपयोग करके हम दस्तावेज़ को एक नई जगह पर सेव कर सकते हैं, जिससे विभिन्न संस्करणों को प्रबंधित करना आसान हो जाता है।

3. अंडू और रेडू (Ctrl + Z, Ctrl + Y)

"Ctrl + Z" का उपयोग अंडू (undo) करने के लिए किया जाता है, जिसका मतलब है कि अगर हमने कोई गलती की है, तो इसे वापस लिया जा सकता है। "Ctrl + Y" रेडू (redo) के लिए होता है, जो अंडू किए गए कार्य को फिर से लागू करता है। ये शॉर्टकट्स हमें दस्तावेज़ में त्रुटियों को ठीक करने में मदद करते हैं।

4. सभी चुनें और खोजें (Ctrl + A, Ctrl + F)

"Ctrl + A" शॉर्टकट से हम किसी भी दस्तावेज़ में सभी सामग्री को जल्दी से चुन सकते हैं। "Ctrl + F" का उपयोग किसी भी दस्तावेज़ में विशिष्ट शब्द या वाक्यांश को खोजने के लिए किया जाता है, जो बड़े दस्तावेज़ में जानकारी ढूँढ़ने में सहायक होता है।

5. विंडो और मिनिमाइज (Windows Key, Alt + Tab)

"Windows Key" का उपयोग विंडोज़ मेनू खोलने के लिए किया जाता है, जिससे हम विभिन्न एप्लिकेशन और फ़ाइलों तक जल्दी पहुंच सकते हैं। "Alt + Tab" का उपयोग खुले हुए एप्लिकेशनों के बीच स्विच करने के लिए किया जाता है, जो मल्टीटास्किंग को सरल बनाता है।

इन शॉर्टकट्स का उपयोग करने से हम अपने कंप्यूटर पर अधिक प्रभावी ढंग से काम कर सकते हैं और समय की बचत कर सकते हैं।

अकेलापन

असित हालदार, एम.टी.एस.

एक बार की बात है, एक छोटे से गाँव में गौरी नाम की एक दयालु बूढी महिला रहती थी । गौरी गाँव के बाहरी इलाके में एक छोटे से घर में अकेली रहती थी। अकेले होने के बावजूद, गौरी अपने साधारण जीवन से संतुष्ठ थी। वह अपने छोटे से बगीचे की देखभाल करने और गाँव के बच्चों के लिए स्वेटर बुनने में अपना दिन बिताती थी।

एक शाम, जब गौरी रात का खाना बना रही थी, तो उसने देखा कि उसके घर का पिछला दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था। उसे याद नहीं था कि उसने इसे खुला छोड़ा था, लेकिन उसने मान लिया कि यह उसकी भूल थी और उसने इसे बंद कर दिया। उसने खाना बनाना जारी रखा, लेखिन वह इस भावना से छुटकारा नहीं पा सकी कि उसके घर में कोई आया था।

जैसे ही वह अपना खाना खाने बैठी, उसने अपने लिविंग रूम से एक अजीब सी आवाज सुनी। वह जाँच करने के लिए उठी और पाया कि उसका पसंदीदी फूलदान मेन्टेलपीस से गायब था। गौरी तबाह हो गई क्योंकि फूलदान उसके दिवंगत पति से एक उपहार था और उसके लिए बहुत भावनात्मक मूल्य रखता था।

गौरी ने फूलदान को अपने पूरे घर में खोजा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला। वह अपने ही घर में अपमानित और असुरक्षित महसूस कर रही थी। वह जानती थी कि उसे कार्रवाई करनी होगी, इसलिए उसने पुलिस को बुलाया।

पुलिस जल्दी से पहुँची और गौरी के घर की अच्छी तरह से तलाशी ली। दुर्भाग्य से, उन्हें कोई सुराग नही मिला। पुलिस ने गौरी को सावधान रहने और अपने दरवाजे और खिड़कियाँ ठीक से बंद करने की सलाह दी।

डरी हुई और अकेली महसूस करते हुए, गौरी उस रात जल्दी सो गई। वह सोचती रही कि कौन उसके घर में घुसकर चोरी करेगा। जब वह सोने के लिए लेट गई, तो उसने अपने दिवंगत पति के बारे में सोचा कि यदि वे अभी जीवित होते तो उसकी रक्षा कैसे करते।

अगली सुबह, जब वह जागी, तो उसने देखा कि उसका पिछला दरवाजा फिर से खुला था। उसने एक बार फिर पुलिस को बुलाया। इस बार पुलिस चोर को रंगे हाथ पकड़ने में सफल रही।

जब पुलिस चोर को ले जा रही थी, तो गौरी सोचती रही कि चोर उसके घर में दो बार क्यों घुसा। चोर ने उसकी ओर देखा और कहा, "मेरा तुम्हें डराने का कोई इरादा नहीं था, मैं तो बस तुम्हारा फूलदान लौटाना चाहता था। मैंने इसे गलती से ले लिया था, और मुझे इसका पछतावा हो रहा था। मुझे खेद है।"

फूलदान वापस पाकर गौरी को राहत मिली, लेकिन चोर की बातों से वह उलझन में पड़ गई। "तुमने पिछला दरवाजा खुला क्यों छोड़ा?" उसने चोर से पूछा। चोर ने कंधे उचकाए और कहा, "मुझे लगा कि तुम्हें किसी दोस्त की जरूरत होगी।"

गौरी को एहसास हुआ कि चोर कोई बुरा इंसान नहीं था, बस उसे किसी से बात करने की जरूरत थी। उसने चोर को एक कप चाय पर आमंत्रित किया और वे बातें करने बैठ गए। गौरी को पता चला कि चोर मुश्किल दौर से गुजर रहा था और उसके पास कोई नहीं था जिससे वह बात कर सके। उस दिन से गौरी और चोर अच्छे दोस्त बन गए।

प्रदूषणः एक संकट

देबिका चक्रबर्ती, सहायक पर्यवेक्षक

'प्रदूषण' शब्द का अर्थ है किसी भी अवांछित विदेशी पदार्थ का किसी चीज में प्रकट होना। जब हम पृथ्वी पर प्रदूषण के बारे में बात करते हैं, तो हम विभिन्न प्रदूषको द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण का उल्लेख करते हैं। यह सब मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों के कारण होता है जो पर्यावरण को एक से अधिक तरीकों से नुकसान पहुँचाते हैं। इसलिए, इस मुद्दे से तुरंत निपटने की तत्काल आवश्यक्ता उत्पन्न हो गई है। हमें प्रदूषण के प्रभावों को समझने और इस नुकसान को रोकने की आवश्यक्ता है।

प्रदूषण के प्रभाव

प्रदूषण जीवन की गुणवत्ता को इतना प्रभावित करता है कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। यह रहस्यमयी तरीके से काम करता है, जिसे कभी-कभी नंगी आँखों से नहीं देखा जा सकता। हालाँकि, यह पर्यावरण में बहुत ज्यादा मौजूद है। उदाहरण के लिए, आप हवा में मौजूद प्राकृतिक गैसों को नहीं देख पाएँगे, लेकिन वे फिर भी वहाँ मौजूद हैं। इसी तरह, हवा को खराब करने वाले और कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को बढ़ाने वाले प्रदूषक मनुष्यों के लिए बहुत खतरनाक हैं। कार्बन डाइऑक्साइड के बढते स्तर से ग्लोबल वार्मिंग होगी।

इसके अलावा, औद्योगिक विकास, धार्मिक प्रथाओं और अन्य के नाम पर पानी को प्रदूषित किया जाता है, जिससे पीने के पानी की कमी हो जाएगी। जिस तरह से जमीन पर कचरा फेका जाता है, वह अंततः मिट्टी में समा जाता है और जहरीला हो जाता है। अगर भूमि प्रदूषण इसी दर से होता रहा, तो हमारे पास अपनी फसल उगाने के लिए उपजाऊ मिट्टी नहीं होगी। इसलिए प्रदूषण को कम करने के लिए गंभीर उपाय किए जाने चाहिए।

प्रदूषण को कैसे कम करें?

प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों को जानने के बाद, जितनी जल्दी हो सके प्रदूषण को रोकने या कम करने के काम पर लग जाना चाहिए। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए, लोगों को वाहनों से निकलने वाले धुएं को कम करने के लिए सार्वजनिक परिवहन या कारपूल का उपयोग करना चाहिए। हालांकि यह कठिन हो सकता है लेकिन त्योहारों और समारोहों में पटाखे न जलाने से वायु और ध्वनि प्रदूषण में भी कमी आ सकती है। सबसे बढकर, हमें रीसाइकिलिंग की आदत डालनी चाहिए। इस्तेमाल किया गया सारा प्लास्टिक समुद्र और जमीन में चला जाता है, जो उन्हें प्रदूषित करता है।

हमें सभी को अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो हानिकारक गैसों को अवशोषित करेंगे और हवा को स्वच्छ बनाएंगे। इसके अलावा उद्योगों को अपने कचरे को महासागरों और नदियों में फेंकने से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए, जिससे जल प्रदूषण होता है।

1.	For approval Please.	अनुमोदनार्थ
2.	Seen and returned with thanks.	देखा, सधन्यवाद वापस किया।
3.	Concurrence of the ministry of finance may be obtained.	वित्त मंत्रालय की सहमति प्राप्त की जाए।
4.	This file may be referred to ministry of law for comments.	यह फाईल टिप्पणी के लिए विधि मंत्रालय को भेज दी जाए।
5.	We have no further comments.	हमें आगे और कुछ नहीं कहना है।
6.	This case is concerned with..... division.	यह मामला .....प्रभाग से संबंधित है।
7.	These papers may be passed on to.....	ये कागज.....को भेज दिया जाए।
8.	This requires administrative approval.	इसके लिए प्रशासनिक अनुमोदन अपेक्षित है।
9.	Retrospective effect can not be given to this order.	इस आदेश को पूर्वप्रभावी नहीं किया जा सकता।
10.	It is suggested that the matter may be discussed at Director level.	यह सुझाव है कि मामले पर निदेशक स्तर पर बैठक बुलाकर विचार-विमर्श कर लिया जाए।
11.	Need no comments.	टिप्पणी की आवश्यक्ता नहीं है।
12.	The proposal is quite in order.	यह प्रस्ताव पूर्णतः नियमानुकूल है।
13.	The final bill is not in the prescribed form.	अंतिम बिल निर्धारित प्रपत्र में नहीं है।
14.	This amount has become irrecoverable, May be written off.	यह राशि अब वसूल होने योग्य नहीं है। इसे बट्टे खाते में डाल दिया जाए।
15.	Orders may be issued.	आदेश जारी कर दिया जाए।
16.	Timely compliance may be ensured.	समय पर अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए।
17.	Issue reminder urgently.	तुरंत अनुस्मारक भेजें।
18.	Should be given top priority.	परम अग्रता दी जाए।
19.	Please discuss.	कृपया चर्चा करें।
20.	Keep in abeyance.	रोके रखा जाए।
21.	Facts of the case may be furnished.	मामले के तथ्य पेश करें।

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की कुछ झलकियां